प्रावकथन

भारतीय संस्कृति में जिन ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, इन त्रय वेद को प्रधानता दी गई है उतनी अथवर्वेद को अभिव्यक्तिक, जानू बिद्या एवं आयुर्वेद से जोड़कर भारतीय एवं पारस्थाय विद्वानों ने इसके एकांगी पक्ष को प्रस्तुत किया है। इसे क्रमागत तीनों वेद से सम्पूर्ण मानकर इसे चतुर्थ वेद की संज्ञा नहीं देते हैं जबकि यह चतुर्थ वेद एक मौलिक यथा है। ऋग्वेद के परस्त्र्य इसी की नैतिकता के क्षेत्र में उपादेयता सिद्ध होती है।

मेरा यह सौभाग्य है कि डॉ० खलिद बिन सुसुफ खाँ ने ‘अथर्ववेद में नीतिव्यक्त’ इस शीर्षक पर मुझे शोध कार्य करने के लिए प्रेमित किया। अतः मैं उनकी हड़ताल से आभारी हूँ। मैंने अपने पिता सदृश गुरू डॉ० खलिद बिन युसुफ खाँ के मार्ग दर्शन में तथा माता सदृश गुरू पत्नी यामीन खलिद के आशीर्वाद से इस कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है।

मैं अपने आध्यात्मिक कुल गुरू स्वामी राधेश्याम तथा बाबा भन्तखण्डी की कृपा तथा आशीर्वाद से एवं स्व माता श्रीमती शानी देवी तथा पिता श्री शूरवीर सिंह चौहान, दादा श्वरीव निरंजन पाल तथा दादी स्वरुपी देवी के आशीर्वाद से एवं दोनों भाई यंत्र एवं मित्र के सहयोग से इस शोध कार्य को पूर्ण कर पायी हूँ।

मैं संस्कृत विभाग के पुस्तकालय की पूर्व अध्यक्ष नुजहत किरदार तथा वर्तमान डॉ० उस्मान खान के द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए भी उनकी आभारी रहूँगी तथा मौलाना आजाद पुस्तकालय के संस्थापक-हिन्दी वर्ग के पीर मोहम्मद तथा नदीम उल हक के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य के लिए पुस्तकें समय पर प्राप्त कराने में मेरी सहायता की।

मैं अपने विभाग के रोधार्थी प्रीती, असर, अंजुम, ममता आदि तथा इमरान, रईस आदि सभी के लिए आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे सहायता तथा समान सिद्धान्त दिया।

शुद्ध एवं स्पष्ट टक्कर हेतु भाई सदृश अहमद अली सेफ़ी को समर्पणान्त तथा आभार प्रकट करती हूँ। अन्ततः प्रस्तुत शोध प्रवचन को नौर-शीर विवेक परिक्षण विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

लीना चौहान